International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 833-834

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 833-834
www.allresearchjournal.com
Received: 21-02-2017
Accepted: 22-03-2017

Shanno Devi
Research Scholar, Deptt. Of Hindi, J.J.T. University, Jhunjhnu, Rajasthan, India

Correspondence
Shanno Devi
Research Scholar, Deptt. Of Hindi, J.J.T. University, Jhunjhnu, Rajasthan, India

समकालीन कथा साहित्य में नारी–चिन्तन

Shanno Devi

1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता के साथ कला साहित्य का अटूट संबधं है। सभ्यता से लेकर आदि काल तक कथाएं किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है। हिन्दी कथा साहित्य में नारी निकेतन का प्रारम्भ बंग महिला (राजबाला घोष) की कहानी 'दुलाईवाली' से माना जाता है। बंग महिला के जीवन वृत की विशेष जानकारी उपलब्ध नहीं है। इन्होंने आचार्य शुक्ल की प्रेरणा से, हिन्दी लेखन प्रारम्भ किया और अनेक बंगला कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया। इनकी कहानियों का संग्रह'कुसुम संग्रह' के नाम से प्रकाशित हुआ। ये कहानी 1907 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। दुलाईवाली कहानी की गणना हिन्दी की पहली मौलिक कहानियों में की जाती है। उसकाल खण्ड में प्रकाशित भिन्न कहानियों में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' और दुलाईवाली' कहानी कला की दृष्टि से बेजोड़ कहानियाँ हैं। इस प्रकार से नारी लेखन में बंग महिला वह प्रथम हस्ताक्षर है जिन्होने कथा साहित्य क्षेत्र में अपना स्थान निर्धारित किया।

द्विवेदी युग की इस क्रान्तिकारी घटना के पश्चात् कथा साहित्य के क्षेत्र में नारी लेखन के विभिन्न सशक्त हस्ताक्षर विद्यमान हैं, जिन्होंने अपनी औपन्यासिक रचनाओं में हिन्दी साहित्य को नयी दिशा प्रदान की।''[1]

हिन्दी कहानी में महिला कथाकारों में शिवानी, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियवंदा, परवेज की कहानियों में स्त्री विमर्श को रेखांकित किया गया है। इनमें पति–पत्नी कि संबंध और आधुनिक नारी की मनः स्थितियॉ का सूक्ष्म और प्रभावी चित्रण मिलाता है।''[2]

2. उषा देवी मिश्रा

उषा देवी मिश्रा हिन्दी कथा साहित्य की आरम्भिक युग की लेखिका है इनकी रचनायें घर परिवार से सम्बद्ध हैं। 'बचपन का मोल' (1936) उषा देवी का प्रथम उपन्यास है , जिसमें इस उपन्यास की नायिका कजरी की चारित्रिक उत्कृष्टता को दिखाया गया है। कजरी, रूप, गुण, विद्या और धन से सम्पन्न लावण्यवमयी युवती है, किन्तु उसका प्रेमी सरोज रोगग्रस्त होकर मृत्यु शैया पर पड़ा है। वह कजरी को विस्तंत नहीं कर पाता और कजरी उसको आजीवन अविवाहित रहने का वचन देती है। इस उपन्यास में कजरी के उत्कृष्ट चरित्र को दिखाया गया है।

3. श्रीमती रजनी पनिक्कर

स्वतन्त्रता के पश्चात् रजनी पनिक्कर एक श्रेष्ठ लेखिका के रूप में है। रजनी जी ने 'ढोकर', पानी की दीवार (1954), मोम के मोती, प्यासे बादल (1955), जाड़े की धूप (1958), काली लड़की (1958), महानगर की मीता (1958), बदलते रंग (1969), आदि अनेक उपन्यासों की रचना की और हिन्दी साहित्य को नया आयाम प्रदान किया। इनके सभी उपन्यासों में नारी पात्रों को आधार मान कर कथावस्तु का ताना बाना बुना गया हैं। भाग –3 यादव (218),

4. कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती का पहला उपन्यास 'डार से बिछड़ी' (1958) है। यह एक लघु आंचलिक उपन्यास है। इस उपन्यास में सोबती जी ने आंचलिक उपन्यास लेखन में महिला कथाकारों का प्रतिनिधित्व किया है व अपनी इस क्षेत्र में उपस्थिति दर्ज करवाई। इनका सर्वाधिक चर्चित उपन्यास 'मित्रों मरजानी है' है। इसकी नायिका मित्रों एक सभ्य परिवार की बहू है, किन्तु उसे उस परिवार की बन्दिशें तथा जीवन यापन के ढंग से नफरत है। सोबती जी ने मित्रों के चरित्र में नारी जीवन के बहुआयामी व्यक्तित्व को गढ़ा है। (219)

5. श्रीमती चन्द्रकिरण सोनरेक्सा

इन्होंने चन्दन चांदनी (1962) चिता (1972), आदि उपन्यासों की रचना की। चन्दन चॉदनी एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की कहानी हैं जिसकी नायिका गरिमा है। निम्न माध्यम से वर्गीय समाज की समस्याओं, जिनमें दहेज प्रथा, बेरोजगारी, जातीय संकीर्णता, छूआछूत, स्त्रियों के प्रति मानसिक संकीर्णता आदि का यथार्थ अंकन इस उपन्यास में किया गया है। (219)

6. शिवानी

गौरापंत 'शिवानी' स्वातन्त्रयोतर युग की एक सशक्त प्रभावशाली एवं लोकप्रिय कथा लेखिका है। उनके उपन्यासों में शरत चन्द्रीय भावुकता और प्रेमचन्द्रीय यथार्थवादिता का गंगा यमुना समन्वय प्रबुद्ध पाठकों को एक साथ समुपलब्ध हो जाता हैं। उनके उपन्यासों में आधुनिकता का जो आरोप है, वह नयी पीढ़ी को अपनी ओर आकर्षित करता है। मायापुरी (1961), चौदह फेरे (1972), कृष्णकाली (1969), शमशान चम्पा (1978) प्रसिद्ध और विस्तृत घटना क्रम पर आधारित औपन्यासिक रचनायें है।(220)

7. मन्नू भण्डारी

हिंदी उपन्यास साहित्य में मानव जीवन के विभिन्न चित्रों की सार्थक भाषा और प्रतीक प्रदान करने वाली मन्नू भण्डारी का कथा लेखन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। भण्डारी जी के उपन्यासों में नारीमन की सुकुमार भावनाओं के साथ–साथ पुरूष मन में उठने वली शंकाओं, ईर्ष्याओं तथा छलछदमों का खुलासा किया है। प्रायः इनके उपन्यासों में जीवन की अनेक समस्याओं का चित्रांकन किया गया है। 'एक इंच मुस्कान' के अतिरिक्त आपका बेटी (1971) तथा महाभोज (1979), दो प्रसिद्ध औपन्यासिक रचनाएं है। (220)

8. मालती जोशी

मालती जोशी नारीमन के अन्तर्द्वन्द्व की सहजपरखी तथा उसकी तह तक पहुॅचने वाली आधुनिक कथा लेखिका है। बदलते युग संदर्भ में आस्था, धर्म, नैतिकता, परम्परा, मानवीय मूल्य, विवाह संस्कृति पहनावा, खानदान आदि के प्रति गहन लगाव है। पाषाण युग (1978) मध्यान्तर सहचारिणी (1979), एक घर सपनों का, समर्पण का सुख (1979), विश्वास गाथा (1982), आदि इनकी औपन्यास रचनाएं है। (222),

9. उषा प्रियवंदा

पचपन खम्भे लाल दीवारें नामक उपन्यास से विशेष चर्चा में आई। उषा प्रियवंदा वर्तमान हिन्दी कथा साहित्य की प्रमुख हस्ताक्षर है। देशी और विदेशी परिवेश में स्त्री पुरूष के सम्बन्धों के अनुरंजन में प्रियवंदा जी सिद्धहस्त है। 'पचपन खम्बे लाल दीवारे' (1979) रूकोगी नहीं राधिका (1967) तथा शेषयात्रा प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें भारतीय नारी की सामाजिक आर्थिक विवशताओं से जन्मी मानसिक यंत्रणा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। (223)

10. ममता कालिया

नारी जीवन के बहुआयामी व्यक्तित्व को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने में ममता कालिया सिद्धहस्त कथा लेखिका है। पति–पत्नी के सम्बन्धों के खटटे–मीठे दोनों पक्षों को बड़ी सूक्ष्मता से परखने तथा व्यक्त करने में पूरी सफलता मिली है।
ममता कालिया के प्रमुख उपन्यासों में बेघर (1971) तथा नरक दर नरक (1975) विशेष चर्चित उपन्यास है।(224)

11. कुसुम अंसल

जीवन के प्रत्येक पक्षधर अपनी दृष्टि डालने में सक्षम कुसुम अंसल ने अपने उपन्यासों में हास्य व्यंग्य, करूणा, मनोविज्ञान, प्रेम आदि विभिन्न पहलुओं का संजीव चित्रण किया है। परिवार और समाज का नारी के प्रति दृष्टिकोण तथा नारी शोषण की स्थितियों का मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रण किया गया है। कुसुम अंसल के उपन्यासों में इसकी पंचवटी (1376) उस तक (1976) अपनी–अपनी यात्रा (1981), रेखामृति (1987) प्रमुख है। (225)

12. प्रभा खेतान

प्रभा खेतान ने अपने चर्चित उपन्यास छिन्नमस्त (1983) में आधुनिक नारी पुरूष पर अवलम्बित है। यह दिखाकर उसकी आधुनिकता पर संदेह किया है। नारी को स्वयं अपना मार्ग बनाना होगा तथा उसे पुरूषों के सहारे की आवश्यकता न पड़े इसलिए आत्मनिर्भर भी बनाना होगा। अपने उपन्यासों की नायिका प्रिया के माध्यम से उन्होंने नारी की संघर्ष कथा को चित्रित करते हुए आधुनिक नारी समाज को प्रेरणा प्रदान की है।
उपरोक्त कथा लेखिकाओं के अतिरिक्त अन्य अनेक महिला कथाकार हैं जो वर्तमान युग में अपनी रचनाओं के द्वारा कथा साहित्य को नये आयाम दे रही हैं। मिथलेश कुमारी मिश्र का वैरागिन (1982) पद्मा सुधि का उल्टे कोटे, सीधा फूल (1969) रानी सेठ का तत्सम् (1963) ऊषा चौधरी का जान–पहचान अजनबी (1977) सात फेरे अधूरे (1982) निर्मला बाजेई का सूखा सैलाब, सुधा का कातर धूपर (1988) विमला गुप्ता का पंचतप्ता (1988) तथा वंदना चतुर्वेदी का विभावती प्रमुख उपन्यास हैं।
वर्तमान कथा साहित्य में महिला कथाकारों द्वारा सशक्त प्रभावशाली एवं प्रेरणादायी साहित्य का सृजन किया जा रहा है। यह विवरण इस बात का प्रमाण है कि कथा साहित्य का क्षेत्र काव्य जगत की तरह विस्तृत एवं व्यापक है। सबसे बड़ी बात यह है कि इन महिला कथाकारों ने महिलाओं की हीन जीवन दशा को ऊपर उठाने के लिए अपनी रचनाओं के माध्यम से आवाज उठायी, जो कि भविष्य के लिए शुभ संकेत है। महिलाएं सामाजिक ढांचे की धुरी है। अतः उनकी सामाजिक दशा का स्वस्थ होना आवश्यक है। महिला कथाकारों ने इस बात को प्रभावशाली ढंग से बताया है। 227, 228

13. सन्दर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृ0 331
2. पाण्डेय, डॉ0 दिलीप यू.जी.सी. हिन्दी नेट, उपकार प्रकाशन, आगरा पृ0 सं. 153
3. यादव, डॉ. वीरेन्द्र नई सहस्त्राब्दी का महिला सशक्तीकरण भाग 3 –ओमेगा पब्लिकेशन्स, 2010 प्र0 सं. 218, 219, 220, 222, 223, 224, 225, 227, 228